शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

कालिदास के उपास्य अष्टमूर्ति शिव

डॉ.गोपालकृष्ण शर्मा
सहायक प्राध्यापक संस्कृत
शास.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

महाकवि कालिदास के उपास्य तथा आराध्य अष्टमूर्ति शिव का विवेचन प्राचीन काल से लेकर आज तक विभिन्न रूपों में हुआ है। ऋग्वेद से लेकर आधुनिक काल तक भिन्न-भिन्न स्वरूपों में हुआ है परंतु महाकवि के आराध्य अष्टमूर्तियों के विवेचन में वेदांत दर्शन तथा वैदिक संस्कृतिक का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। यद्यपि कालिदासोत्तरकालीन पुराणों व स्मृति ग्रंथों और शास्त्रों में अष्टमूर्ति के भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णन प्राप्त होते हैं, परंतु महाकवि के अष्टमूर्ति शिव साक्षात् परब्रह्म ही प्रतीत होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में कालिदास के उपास्य अष्टमूर्ति शिव के विविध रूपों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

पुरावैदिककाल से लेकर आधुनिक युग तक शिव की आठों मूर्तियों के वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कालिदास का अष्टमूर्ति का वर्णन अत्यंत प्राचीन प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक है जिसने पंचमहाभूतों के क्रम में भले ही व्यतिक्रम नजर आता है परंतु यजमान तथा सूर्य व चंद्रमा को शिव की मूर्ति कहना वैदिक संस्कृति का परिचायक है। इन अष्टमूर्तियों में संपूर्ण ब्रह्म के तथा सृष्टि के दर्शन कालिदास हमें कराते हैं।

पशुपतिनाथ की अष्टमूर्ति अलग प्रकार की दार्शनिक संकल्पना है, जो सब प्रकार की गणनाओं से सर्वथा भिन्न है। मंदसौर नगर में अवस्थित पशुपतिनाथ महादेव की अष्टमूर्ति के विषय में श्री मनोजकुमार श्रीवास्तव ने डॉ.द्विजेंद्रनाथ शुक्ल को उद्धृत करते हुए लिखा है, "शैव संप्रदाय के अनेक अवांतर भेद हैं। उनकी दार्शनिक दृष्टि भी भिन्न है, परंतु शैव धर्म के समान्य तीन सिद्धांत हैं जो 'प' कार से प्रारंभ होते हैं पशु, पाश, पति। शिव पुराण में भी अष्टमूर्ति के माहात्म्य का उद्घाटन अनेकश: किया गया है -

देहिनो यस्य कस्यापि क्रियते यदि निग्रह।
अनिष्टमष्टमूर्तेस्तत्कृतमेव न संशय:।
अष्टमूर्त्यात्मना विश्वंधिष्ठाय स्थित शिवम।
भजस्व सर्वभावेन रुद्र परमकहाणम।

पाशुपत दर्शन के आठ प्रतिपाद्यों का उल्लेख मिलता है यथा - लाभ, मल, उपाय, देश, अवस्था, विशुद्धि, दीक्षा। संभवतः इस कारण भी इसका नामकरण पशुपति रखा गया है। महाकवि ने अष्टमूर्ति का वर्णन कहाँ-कहाँ पर अपने ग्रंथों में किया है। सर्वप्रथम एक संक्षिप्त दृष्टि प्रस्तुत है। इनमें अभिज्ञान शाकुंतलम का नांदी श्लोक सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है -

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुत या हविर्या च होत्री।

ये द्वे कालं विधतः श्रुतिविषय गुणा या स्थिता व्याप्य विश्वं।
यामाहुः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवंतः।
प्रत्यक्षाभि प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीषः।1

मालविकाग्निमित्रम् के मंगलाचरण में भी इसी प्रकार अष्टमूर्ति शिव का स्मरण किया गया है।

एकेश्वर्य स्थितोअपि प्रणति बहुफले यः स्वयं कृतिवासः।
कांतासम्मिश्र देहोअप्यविषय मनसाः वः परस्ताद्यतीनाम्।
अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपितनुभि विभ्रतो नाभिमानः।
सन्मार्गलोकनाय व्यपनयतु वः तामसी वृत्तिमीषः।

इसी प्रकार कुमार संभव महाकाव्य में भी दो बार अष्टमूर्ति शब्द का प्रयोग हुआ है:

विदितो वो यथा स्वार्थाः न ये काष्चित्प्रवृत्वयः।
ननू मूर्तिभिरष्टाभिरित्थम्भूतोस्मि सूचितः।2
तत्राग्निमादाय समितम्समिद्ध स्वमेव मूत्तर्यन्तरमष्टमूर्ति
स्वयं विधाता तपस फलाना केनापि कामेन तपष्चचार।3

रघुवंश महाकाव्य में भी अष्टमूर्ति शब्द का प्रयोग महाकवि ने इस प्रकार किया है -

कैलासगौरं वृषमारुरुक्षोः पादार्पणनुग्रह पादपीठम्।
अवेहि माम् किंकरमष्टमूर्तेः कुम्भोदर नाम निकुम्भमित्रम् 4

विक्रमोर्वशीयम में यद्यपि अष्टमूर्ति का उल्लेख नहीं है परंतु स्थाणु शब्द का प्रयोग कर वेदांत के ब्रह्म के रूप में वे शिव को स्मरण करना चाहते हैं:

वेदांतेषु यमाहुकेरपुरुषं व्याप्य स्थित रोदसी
यास्मिनीष्वर इत्यनन्यनिषयः शब्दो यथार्थपक्षरः
अंतर्यष्च मुमुक्षुभि नियमित प्रणादिभिर्मृग्यते।
सः स्थाणु स्थिर भक्ति योग सुलभो निश्रेयसायास्तु वः।5

कालिदास द्वारा उल्लेखित सभी पद्यों में वेदांत प्रतिपादित ब्रह्म को जनसामान्य के लिए सहज सुलभ बनाने की दृष्टि से ही अष्टमूर्ति के रूप में विवेचन किया है। महाकवि के बाद यह अष्टमूर्ति की दार्शनिक संकल्पना की परंपरा हमें अविच्छिन्न प्राप्त होती है। अष्टरुद्रों की परंपरा तथा प्रामाणिकता भी स्वयं सिद्ध है। इसमें शतपथ ब्राह्मण (6/1/3/7) वायु पुराण, स्कंद पुराण, पद्मपुराण, विष्णु पुराण, मार्कण्डेय पुराण, शिव महिम्न स्रोत में भी यही अवधारणा प्रचलित रही है।

भगवान कृष्ण ने भी गीता में कहा है -

भूमिरापो नलो वायु रवं मनो वृद्धिरेव च
अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिः अष्टधा।6

यहां अष्टधा प्रकृति में पंचमहाभूतों के अतिरिक्त मन, बुद्धि तथा अहंकार को सम्मिलित किया गया है। इस विषय में विष्णु पुराण का अभिमत इस प्रकार है - ब्रह्मंडपुराण में लगभग यही पद प्राप्त होता है:

सूर्यो जल मही वह्नि वायुराकाशमेव च।
दीक्षितो ब्राह्मणः सोम इत्येता स्तनवः स्मृताः।7

विष्णु पुराण के अष्टतनु तथा कालिदास के अष्टतनु का साम्य दर्शनीय है। नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि ने भी अष्टमूर्ति का वर्णन किया है।

पृथ्वीसलिलनानल पवन यज्ञाद्यिपति सूर्यचंद्र व्योमाख्या अष्टो।
मुनेर्यस्य सुता त्रैलोक्य गुरुं तमचिन्त्यजम्।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2014

आचार्य भरत भी कालिदास से भिन्न वर्णन नहीं कर रहे हैं।

लिंग पुराण में अष्टमूर्ति का वर्णन इस प्रकार है -

भूरापोअग्नि मरुद्व्योम भास्करो दीक्षितः शशि
भवस्य मूर्तय/प्रोक्ताः पित्रस्य परमेष्ठितः
पंचभूतानि चंद्रर्कावात्मेति मुनिपुंगवः।
मूर्तयोऽष्टो शिवस्याहु देवदेवस्य धीमतः।

शिवपुराण में:

तस्य शम्भो महेशस्य मूर्त्यष्टकमयं जगत्।
तस्मिन व्याप्य स्थित विश्व सूये माणिगणा इव
शर्वो भवस्तथा रुद्र उग्रो भीमः पशोपति
ईशानश्च महादेवो मूर्तयष्याष्ट
भूम्यम्भोअग्निमरुदव्योम क्षेत्रज्ञार्क निषाकराः
अधिष्ठिताष्च शर्वाद्यैरष्ट रूपै शिवस्य हि।

यहां पर कालिदास वर्णित शिव की अष्टमूर्तियों का वर्णन तो किया ही है साथ में शिव की अन्य आठ मूर्तियों से युक्त इस जगत को बताया है। स्मृतिग्रंथों में भी लगभग इसी प्रकार की पुनरुक्ति प्राप्त होती है -

भूमिरापोअनलोवायुरात्मा व्योम शशि रविः।
इत्यष्टो सर्वलोकानां प्रत्यक्षाः शिवमूर्तयः।

पुष्पदंत ने भी शिवमहिम्न स्रोत में शिव की अष्टमूर्तियों को दो बार अलग-अलग प्रकार से वर्णन किया है:

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमासि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमर्कस्त्वं व्योम त्वमुधरणिरात्मा त्वमिति च।
परिछिन्नामेवं त्वयि परणिता विभ्रतृ गिरं
न विद्मस्तस्तत्वं वयामिह तु यतत्वं न भवसि।8

अन्यत्र:

भव शर्वो रुद्र पशुपतिरथोग्रसह महान्
तथा भीमेशानाविति यदाभिधानाष्टकमिदम्।9

मूर्धाभिषिक्त गद्यसम्राट बाणभट्ट ने भी इन्हीं अष्टमूर्तियों का वर्णन किया है -

पंचब्रह्मपुरस्सरां सम्यक् मुद्रान्धविहित परिकरा ध्रुवागीति गर्भामवनि पवन गगन दहन तपन तुहिन किरण यजमानमयीमूर्तिः अष्टावपि ध्यायन्तो सुचिरमष्टपुष्पिकामदात्। हर्षचरितम्

शिव को पशुपति के रूप में याद करना दशपुर जनपद की लोकचेतना का अत्यंत पुरातन तीर्थ को स्मरण करने के समान है। श्री मनोज श्रीवास्तव के अनुसार यह अष्टमूर्ति शिव किस प्रकार राष्ट्रीय और सांस्कृतिक समरसता का प्रतीक है और भारत की विविधता में एकता के दर्शन कराते हैं। उनकी संकल्पना में शिव के आठ मंदिर आठ तत्वों के परिचायक हैं यथा -1 सूर्य मंदिर (कोणार्क), 2 सोमनाथ (चंद्र) 3 नेपाल के पशुपतिनाथ (यजमान), 4 तिरुवण्णमल्लै या अरुणाचल का तेजोल्लिंग, 5 उत्तर अर्काट का काल हस्तीश्वर (वायुलिंग), 6 शिवकांची का एकाग्रेश्वर क्षितिलिंग, 7 त्रिचनापल्ली का जम्मुकेश्वर आपलिंग और 8 चिदंबर का लिंग है। शतपथ ब्राह्मण में इसी प्रकार अग्नि को अष्टरूपा कहा गया है। (तान्येतानि अष्टो अग्निरूपाणी 6.1.3.1 - 18), आठ रूप वसुओं का वर्णन सर्वत्र प्राप्त होता है। सांख्यायनसूत्र में भी इस प्रकार वर्णन है ऋग्वेद के 'पशुप' शब्द का भी (1.114.9) तात्पर्य पशुपति ही है।

अष्टतनु -

जल वह्निनस्तथा यष्टा, सूर्यचंद्रमसौ तथा।
आकाषं वायुरवनी मूर्तयोष्टा पिनाकिनः।

इस विषय पर केंद्रित श्री दक्षिणामूर्ति का एक और पद्य भी है

भूरम्भास्यनलोअनिलोम्बरमहर्नाथो हिमांशु पुमान।

इत्याभाति चराचरात्मकमिद यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।

पंडितराज जगन्नाथ की सौंदर्यलहरी में भी यही भाव प्रकट हो रहा है -

मनस्त्वं व्योमं त्वं मरुदसि मरुत्सारथि रसि।
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वार्य परिणतायां नहि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितु विष्वपुषा
चिदानंदाकारं शिवयुवति भावेन विभ्रषे।

कालिदास, व्यास व वाल्मीकि की परंपरा के कवि हैं। निगमागम भाषालक्षणज्ञ हैं। इस कारण मेरा मत है कि यहां पर कालिदास ने सगुण ब्रह्म की उपासना की है। ईश शब्द का प्रयोग सगुण ब्रह्म की उपासना के लिए किया गया है, क्योंकि स्तुति के रूप में सगुण ब्रह्म की उपासना की जाती है। ये अष्टमूर्तियां उसी की परिचायक हैं। वेदांत के ब्रह्म को सगुण ब्रह्म के रूप में प्रस्तुत किया है - माण्डूक्य व तैत्तिरीय उपनिषद के उद्धरण इसमें प्रमाण हैं। अन्यत्र वेदांतेषु.....शब्द का उल्लेख कर भी शिव का स्थाणु रूप में वर्णन है। वह भी ब्रह्म की उपासना को ही बताता है। भरतवाक्य में कहा गया 'आत्मभू' शब्द भी आत्म तत्व की चेतना व शक्ति को बताता है।

ममापि च क्षपयतु नीललोहित पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।

कालिदास के अष्टमूर्ति शिव शुद्ध सत्व प्रधान पराशक्ति हैं। वे सृष्टि स्थिति और लय के नियामक हैं। कालिदास का तनु से युक्त ईश्वर शुद्ध सत्वप्रधान है। निर्गुण ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है यह समष्टि। शरीर रूपी ब्रह्माण्ड का अधिपति है। यह समष्टि शरीर ही शाकुंतल का अष्ट तनु है। इसलिए यहां ईश पद का प्रयोग किया गया है।

आचार्य शेषेन्द्र शर्मा ने षोडषी में यद्यपि इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं, परंतु उन्होंने इस पद्य की तांत्रिक व्याख्या प्रस्तुत कर इस पूरे पद्य का अर्थ शक्तिपरक किया है। इस पद्य में प्रयुक्त तनु या ये याम् को स्त्रीलिंग मानकर इसकी शक्तिपरक व्याख्या की है परंतु कालिदास ने शिव को व्यापक अर्थ में ब्रह्म के रूप में ही स्वीकार किया है।

शिवमद्वैतं चतुर्थ मन्यते - माण्डूक्य उपनिषद।

आत्मनः आकाशः सम्भूतः, आकाशादवायुः वायुरग्नि अग्नेरापः, अदभ्य पृथिवी ओषधय - तैत्तिरीय कालिदास के पद्य में यह क्रम नहीं है। जल को प्रथम आद्यसृष्टि मूर्ति मानने के पक्ष में भी अधिक शास्त्र प्रमाण नहीं है। परंतु महत्वपूर्ण यह है कि वेदांतानुसार पंचमहाभूतों को अष्टमूर्ति में सम्मिलित किया गया है।

कालिदास साहित्य व काव्यशास्त्र के विश्वविख्यात विद्वान् आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ने न केवल कालिदास ग्रंथावली के मुखपृष्ठ पर अष्टमूर्ति शिव का चित्र प्रकाशित किया है अपितु कुमार सम्भव के आठ सर्गों को भी अष्टमूर्ति शिव के नामकरण के आधार पर ही स्वीकार किया है। कुमार सम्भव के आठवें सर्ग के अंत में उन्होंने लिखा-

अष्टमूर्ति महाकाव्यस्यास्य शोधे ममैष यः।
श्रमों रेवाप्रसादस्य प्रीयेतां तेन तौ गुरु।

सभी आठ नामों की सार्थकता का प्रतिपादन भी उन्होंने किया है। 1 उमोत्पत्ति नाम - पृथिवी मूर्ति, 2 मदनागमो नाम - जल मूर्ति, 3 मदनदहन र्- अग्निमूर्ति, 4 रतिविलाप - वायुमूर्ति, 5 पार्वती तप फल - आकाशमूर्ति, 6 उमाप्रदानो नाम - चंद्रमूर्ति, 7 उमापरिणय - सूर्यमूर्ति, 8 पार्वतीपरमेश्वर सामरस्य वर्णन - यजमानमूर्ति।

संदर्भ ग्रंथ

1 पशुपति, श्री मनोजकुमार श्रीवास्तव

2 वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ.बलदेव उपाध्याय
3 पुराण विमर्श, डॉ.बलदेव उपाध्याय
4 संस्कृत साहित्य का इतिहास, कपिल देव द्विवेदी
5 अष्टमूर्ति शिव, श्री मदनलाल जोशी
6 षोडषी, श्री शेषेंद्र शर्मा
7 अभिज्ञान शाकुंतलम, कपिल देव द्विवेदी
8 अभिज्ञान शाकुंतलम, बाबूराम त्रिपाठी
9 अभिज्ञान शाकुंतलम, श्री नवलकिशोरकर